आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण: - कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2591 • उदयपुर, शुक्रवार 28 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

आदिवासी बहुत रणेश जी में शिक्षा-चिकित्सा, स्वास्थ्य सुधार एवं सहायता शिविर

उदयपुर। दीन–हीन निर्धन आदिवासी वर्ग के उत्थानार्थ नारायण सेवा संस्थान द्वारा शुक्रवार को कोटड़ा तहसील के पिपलखेड़ा ग्राम पंचायत के अति दुर्गम पहाड़ियो में स्थित रणेशजी गांव मे शिक्षा–चिकित्सा, स्वास्थ्य सुधार एवं सहायता शिविर संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल के नेतृत्व में आयोजित हुआ। शिविर में कुपोषित, मेले कुचले आदिवासी बच्चों के नाखून व बाल काटकर, मंजन करवाकर उन्हें नहला–धुलाकर 150 टूथपेस्ट–ब्रश, 250 स्वेटर एवं पौष्टिक बिस्किट बांटे गये। प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि शिविर में आयी मजदूर परिवार की औरतों को कीटाणुओं से होने वाली बीमारीयों से अवगत कराया एवं मौसमी बीमारी से स्वस्थ रहने के उपाय बताये गये। साथ ही उन्हें सर्दी से बचाव के लिए 250–250 कम्बल, स्वेटर, मौजे, चप्पल वितरित किए गये। शिविर में आए 3 दिव्यांगों को वॉकर, 3 को स्टीक, 1 को बैशाखी दी गयी। वही 2 अतिनिर्धन एवं कुपोषित परिवारों को घर–घर जाकर एक महिनें की राशन सामग्री दी गयी तो एक विधवा बहिन की दयनीय दशा को देखकर को सिलाई मशीन भेंट की गयी। संस्थान की मेडीकल टीम ने 150 ग्रामीणों का स्वास्थ्य परिक्षण भी किया। डॉक्टर अक्षय जी गोयल ने बताया कि इन आदिवासियों में सर्दी जुखाम, एलर्जी दर्द फीवर दाद–खुजली केवीटी एनिमिया जैसी बीमारीयों के लक्षण पाये गये जिन्हें उपचार देते हुए निःशुल्क दवाईयां दी गयी। इन्हें रोगों के प्रति जागरूक करते हुए 200 साबुन, मास्क, सेनेटाइजर आदि भी वितरित किये गये। शिविर में 30 सदस्य साधकों की टीम ने सेवाएं दी। शिविर का संचालन स्थानीय संयोजन आंगनवाड़ी कार्यकर्ता लीलादेवी जी ने तथा संस्थान की और से दल्लाराम जी पटेल, दिलीप सिंह जी मनीष जी परिहार ने किया।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश), दिव्यांग जॉंच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण दिव्यांग सहायक उपकरण एवं दिव्यांग ऑपरेशन जारी है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जॉंच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 9 जनवरी 2022 को समर्पण विहार कॉलोनी फेज 1 पहाडिया वाराणसी में संपन्न हुआ।

शिविर सहयोगकर्त्ता भारत विकास परिषद वरूणा सेवा संस्थान ट्रस्ट रहा। शिविर में 298 का रजिट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 101, कैलीपर माप 12, की सेवा हुई ऑपरेशन हेतु 60 का चयन किया गया। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री इन्दु सिंह जी (अध्यक्ष भारत विकास परिषद), अध्यक्षता श्री रमेश जी लालवानी जी (संस्थापक भारत विकास परिषद वरूणा सेवा संस्थान), विशिष्ट अतिथि श्री मनोज कुमार जी (उपाध्यक्ष), श्री विवेक कुमार जी सूद (सचिव), श्री ब्रह्मानंद जी पेशवानी जी (समाजसेवी), श्री डॉ शिप्रा जी धर (समाजसेवी), सीए आलोक जी (सीए)। डॉ. सचिन कुमार के निदेशन में कैलीपर्स माप टीम श्री पंकज जी (पीएनडो), श्री नरेश जी वैष्णव (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री अखिलेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री बजरंग जी (सहायक), श्री गोपाल गोस्वामी जी (सहायक), श्री प्रवीण जी (विडियोग्राफर), श्री कपिल जी (सहायक), श्री संदीप भटनागर ने भी सेवायें दी।

नवागन्तुक कलेक्टर का स्वागत

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान के प्रतिनिधि मण्डल ने अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल के अगुवाई में नवागन्तुक जिला कलेक्टर ताराचन्द जी मीणा व पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार जी चौधरी का स्वागत किया। उन्हें संस्थान के सेवा प्रकल्पों से अवगत कराते हुए अग्रवाल ने संस्थान अवलोकन का आग्रह किया। जिला कलेक्टर मीणा ने संस्थान द्वारा विभिन्न जिलों में पूर्व में लगाए गए दिव्यांग सहायता शिविरों में अपनी सहभागिता का जिक्र करते हुए कहा कि संस्थान दिव्यांगों एवं निराश्रितों की सेवा के अच्छे कार्य कर रहा है। प्रतिनिधि मण्डल में विष्णु जी शर्मा हितेषी भगवान प्रसाद जी गौड़ और मनीष जी परिहार शामिल थे।

कुकटपल्ली (तेलंगाना) दिव्यांग जॉंच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जॉंच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत कर रहा है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जॉंच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 9 जनवरी 2022 को एवं सत्य साक्षी संघ, लोढ़ा अपार्टमेंट के पास, एस.बी कॉलोनी कुकटपल्ली हैदराबाद में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता सत्य साक्षी संघ कुकटपल्ली हैदराबाद रहा। शिविर में 150 का रजिस्ट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 24, केलीपर माप 21 की सेवा हुई व 08 का ऑपरेशन हेतु चयन हुआ। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमती जया रमेश जी जागीरदार (समाजसेविका), अध्यक्षता श्री रामया (समाजसेवी), विशिष्ट अतिथि श्री पारस जी जागीरदार जी (समाजसेवी), श्रीमती अल्का जी चौधरी (शाखा संयोजिका), श्री धारीणी जागीरदार जी (समाजसेवी), डॉ. अजुमुद्दीन जी के निर्देशन में केलीपर्स माप टीम श्री आर.एन. ठाकुर (पीएनडो), श्री नाथूसिंह जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री लालसिंह जी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश त्रिपाठी जी, श्री बहादुर सिंह (सहायक), श्री अनिल जी (विडियोग्राफर) ने सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity
आत्मीय स्नेह मिलन
एवं
भामाशाह सम्मान समारोह
स्थान व समय
रविवार 06 फरवरी 2022 प्रातः 11.00 बजे से
अरेरा फार्म मैरिज गार्डन, रेडिसन होटल के सामने, ईश्वर नगर गेट, गुलमोहर, भोपाल (म.प्र.)
मानव सेवा संघ भवन, पुराना बस स्टेण्ड करनाल - हरियाणा
इस सम्मान समारोह में
सभी दानवीर, भामाशाह सादर आमंत्रित है।
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
+91 7023509999
+91 2946622222

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity
विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर
रविवार 06 फरवरी 2022 प्रातः 9.00 बजे से
स्थान
जगजीवन स्टेडियम स्टेशन रोड, प्रखण्ड कार्यालय के पास मोहनीया जिला - कैमूर - बिहार
पन्नालाल हीरालाल स्कूल, खादी भण्डार के पीछे, बीदर- कर्नाटक
गुरुद्वारा श्री जन्डसर साहिब, बहादुर द्वार बरेटा, तह.- बुडलाडा, जिला - मानसा, पंजाब
माहेश्वरी भवन, बस स्टेण्ड रोड, शेहगांव, बुलढाणा, महाराष्ट्र
इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।
+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

हैं समय बड़ा बलवान,
पर्वत भी झुक जाया करते हैं।
अक्सर समय के चक्कर में,
सब चक्कर खाया करते हैं।।
पर कुछ ऐसे होते हैं,
जो इतिहास बनाया करते हैं।।

आज इतिहास बनावें तो बचत का। ये हमारा शीतल भैया ने ये लाकर रख दिया, एक दस का नोट भी इसके अन्दर है। ऐसे–ऐसे बचत करें। अपने बच्चों को भी आदत डालें और बच्चों को आदत कब डाल पाऐंगे जब आपकी आदत पड़ेगी कोई सेविंग बैंक में करावे, कुछ पोस्ट ऑफिस में जमा करावे, आर.डी. अकाउन्ट् खोल देवें। नारायण सेवा संस्थान् के नाम का पोस्ट ऑफिस खुल गया है। जब आप यहाँ ईलाज के लिए आते हैं आपके सगे, सम्बन्धी आते हैं, दानवीर महोदय पधारते हैं। आप किसी भी तरह का ट्रॉन्जेक्शन कर सकते हैं। यहाँ इस पोस्ट ऑफिस में डिजीटल पर्ची जमा करावे भारत के किसी भी पोस्ट ऑफिस में आप निकाल सकते हो। आर.डी. अकाउन्ट भी खुलवा सकते हैं। लाला पर कुछ ऐसे होते हैं जो इतिहास बनाया करते हैं। सुमित्रा जी ने भी एक इतिहास बनाया। सुमित्रा जी जब पधारी उनके साथ उर्मिला जी थी, और सुमित्रा जी ने जैसे सुना मेरी जीजी बाई बोल रही है, उनके पैर पड़ूंगी मैं अरे कैकयी के पड़ूगी। कैकयी जिनकी मति भंग हो गई, भ्रम हो गया जो मंदमति मंथरा के बहकावे आ गई है। वही से बोल आती है –

नहीं–नहीं ये कभी नहीं यही दैन्य विषय बस रहे यही।
रुके राम जननी जब तक, गूंजी नहीं गिरा तब तक।।

गिरा कहते है जिह्वा को, जब तक कौशल्या माता जी ने बोला उसी क्षण सुमित्रा माताजी ने सुन लिया था। ये अनर्थ हो रहा है, अन्याय हो रहा है। राम भगवान स्थिर बुद्धि, स्थित प्रज्ञ न व्याकुलता है, न मन में व्यग्रता, आज सुबह मन में विचार आ रहा था। श्रीराम भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम है, और कृष्ण भगवान भी अवतार थे। कृष्ण भगवान ने गीता जी में जो 12 वें–13 वें अध्याय में है, अर्जुन कौन से भक्त मुझे प्रिय है, वो सब गुण भगवान श्रीराम में वो तो अपने भक्त के कारण है, कृष्ण भयो रघुनाथ गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज जब वृन्दावन में पहुँचे, बांके बिहारी जी के मन्दिर में पहुँचे, बोले धनुष–बाण हाथ में ले लो मेरे राम बन जाओ, कृष्ण भगवान राम बन गये बांके बिहारी जी राम बन गये।

नारायण सेवा का आभार

जिन्दगी को उम्मीदों का सहारा कोई नहीं था। अरविन्द की रीढ़ की हड्डी निष्क्रिय और पत्नी ममता दिव्यांग। बिना सहारे खुशियों की बेल पनपती नहीं। पर इन बेसहारा को सहारा दिया नारायण सेवा संस्थान ने। आज दोनों एक–दूसरे का सहारा हैं।

वह कहता है–नारायण सेवा संस्थान में कम्प्युटर कोर्स हमने सीखा था। तीन महीने का कोर्स था वहां पर। जो हम सीखो हैं, उसका हमें यहां पर फायदा हुआ है।

मैडम पढ़ाती है अच्छी नॉलेज है। बच्चों को अच्छा से पढ़ा पा रही है। ममता कहती है, पहले मुझको कम्प्युटर के बारे में नॉलेज भी नहीं थी तो मन ये करता था कि आगे हम बढ़ चलें कि कम्प्युटर का जमाना जो आ रहा है। हमारी हार्दिक इच्छा थी कि हम कम्प्युटर का कोर्स सीखें। तो हमने वहां कम्प्युटर का कोर्स सीखा। अरविंद कहते हैं आज हमारी मेडम स्कूल में पढ़ाती है और मैं ट्यूशन पढ़ाता हूँ मतलब और भी बेसिक नॉलेज है। हमको वहां से ये बेनेफिट मिला। संस्थान ने उन्हें कम्प्युटर का निःशुल्क कोर्स प्रदान किया। जो उनकी कमाई का जरिया बन गया। संस्थान जो बेसहारा रहते हैं उनको सहारा देते हैं। खाने – पीने की सुविधा देते है। हर चीज की, वहां पर लोगे ऐसे आते हैं जो भी चल नहीं पाते है उनका ऑपरेशन हो जाता है। अच्छे से चलकर वो घर चले जाते हैं। कृतज्ञ हृदय कहता है हजारों बार नारायण सेवा का आभार।

सम्पादकीय

कर्म फल का सिद्धान्त बड़ा अद्‌भुत् है। हम जैसा कर्म करेंगे वैसा ही फल मिलेगा। जैसा बीज बोयेंगे वैसा ही परिणाम आयेगा। माना कि हमने गेहूँ बोया है तो गेहूँ ही मिलेगा। गेहूँ बोने पर आम नहीं आता। और भी एक विशेष बात है कि हमने गेहूँ बोया तो गेहूँ मिलेगा, आम बोया तो आम मिलेगा किन्तु वह भी एक समय के बाद। जब उचित समय आयेगा तभी फल मिलेगा। आजकल हम कर्म सिद्धान्त को भुलाने लगे हैं। कर्म तो करते नहीं और फल की आशा में लग जाते हैं या कर्म करते ही तुरंत फल की आशा बलवती होने लगती है। ऐसा न प्रकृति में संभव है और न परमात्मा प्रदत्त मानव जीवन में। कर्म के सिद्धान्त की एक और विशेषता है कि यह पिछला व अगला भी गणना में विद्यमान रहता है। कई बार हम इस जन्म में कोई अच्छे कर्म नहीं करते पर अच्छे फल पाते हैं, या अच्छे कर्म करते हुए भी बुरे फल पाते हैं। यह सब समय व परिस्थिति का प्रावधान है। इसलिये ही कहा गया है कि फल की इच्छा किये बिना कर्म करते रहें हम।

कुछ काव्यमय

कर्मों का लेखा जोखा
जन्म जन्म तक चलता है।
जैसा बोयें बीज वही
मौका पाकर फलता है।
यह सिद्धान्त हमेशा हमको याद रहे।
कभी न प्रभु से कोई फरियाद रहे।

- बरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

अहंकार के रोग से बचें

धनुर्विद्या के कई मुकाबले जीतने के बाद एक युवा धुरंधर को अपने कौशल पर घमंड हो गया। उसने एक पहुंचे हुए गुरु को मुकाबले के लिए चुनौती दी। गुरु स्वयं बहुत प्रसिद्ध धनुर्धर थे। युवक ने अपने कौशल का प्रदर्शन करते हुए दूर एक निशाने पर अचूक तीर चलाया। उसके बाद उसने एक और तीर चलाकर निशाने पर लगे तीर को चीर दिया। फिर उसने अहंकार पूर्वक गुरु से पूछा, "क्या आप ऐसा कर सकते हैं?" गुरु इससे विचलित नहीं हुए और युवक को अपने पीछे–पीछे पहाड़ पर चलने के लिए कहा। युवक समझ नहीं पा रहा था कि गुरु के मन में क्या था। इसलिए वह उनके साथ चल दिया। पहाड़ पर चढ़ने के बाद वे एक ऐसे स्थान पर आ पहुंचे, जहां दो पहाड़ों पर चढ़ने के बाद वे एक ऐसे स्थान पर आ पहुंचे, जहां दो पहाड़ों के बीच एक गहरी खाई पर एक कमजोर सा रस्सियों का पुल बना हुआ था। पहाड़ पर तेज हवाएं चल रही थीं और पुल बेहद खतरनाक तरीके से डोल रहा था। उस

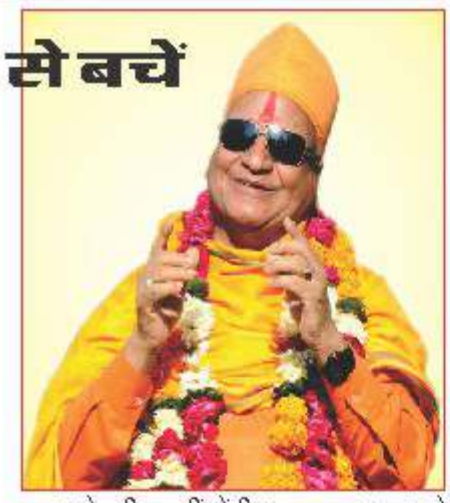

पुल के ठीक बीचोंबीच जाकर गुरु ने बहुतदूर एक वृक्ष को निशाना लगाकर तीर छोड़ा, जो बिल्कुल सटीक लगा। पुल से बाहर आकर गुरु ने युवक से कहा, "अब तुम्हारी बारी है।" यह कहकर गुरु एक ओर खड़े हो गए। भय से कांपते–कांपते युवक ने स्वयं को जैसे–तैसे उस पुल पर किसी तरह से पैर जमाने का प्रयास किया। पर वह इतना घबरा गया था कि पसीने से भीग चुकी उसकी हथेलियों से उसका धनुष फिसल कर खाई में समा गया। गुरु बोले, "इसमें कोई संदेह नहीं है कि धनुर्विद्या में बेमिसाल हो, लेकिन उस मन पर तुम्हारा कोई नियंत्रण नहीं जो किसी तीर को निशाने से भटकने नहीं देता।"

बंधुओं ! अहंकार खतरनाक है। इससे सदैव बचें। संसार में आज भी ज्यादातर लोग इस रोग के शिकार हैं। धन, पद, जाति, धर्म अथवा और किसी बात का अहंकार व्यक्ति के सार्थक जीवन में भटकाव ही पैदा करता है। अहंकार के कारण व्यक्ति ही स्वयं को नहीं जान पाता तो वह ईश्वरीय सत्ता का अनुभव कैसे कर पाएगा। अहं से अहं का नाश नहीं होता। अहं के पीछ अहं जन्य कारण ही होते हैं। अहंकार द्वारा शारीरिक क्रियाओं–लक्षणों में परिवर्तन, रासायनिक स्त्राव में परिवर्तन, पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन, मानसिक चिंतन और सामाजिक सरोकारों में परिवर्तन होने लगता है। इस प्रकार अहं का दायरा बहुत व्यापक है। अहं हमारे स्थूल व्यक्तित्व का एक पुर्जा हैं। जिसके परमाणु हमारे शरीर में व्याप्त हैं। हमें उन परमाणुओं का संप्रेषण कर अहं के स्त्रावों को मिटाना है।

–कैलाश 'मानव'

क्षमाशील बनें

हम कहते है कि सबसे खूँखार कोई जानवर है हमारे इस धरती पर तो वो शेर है। भोर, खूँखार भोर को भी प्रेम से, प्यार से, स्नेह से व्यक्ति अपने वश में कर लेता हैं। आपने देखा होगा डिस्कवरी पर, वाईल्ड एनिमल चैनल पर काफी सारे भोर एक व्यक्ति के चारों तरफ लौटते–पौटते है।

उस व्यक्ति को चाटते है, वह व्यक्ति उनके मुँह में हाथ दे देता हैं। तरह – तरह से उनके साथ अठखेलियाँ करता है लेकिन भोर उसके साथ प्यार से व्यवहार करते हैं, उसको काटते नहीं है, उसको तकलीफ नही देते, उसको मारते नहीं है। तो मित्रों क्यों न हम लोग कोशिश करें कि हम

माफ करना सीखें।

राजा माफ नहीं करता था, छोटी–छोटी गलतियों पर बड़े–बड़े दंड देना कहीं भी ठीक नहीं है, न्याय संगत नहीं है। माफ करना सीखें। जैसे हम अपनी गलतीयों को माफ कर देते हैं, वैसे औरों की गलतियों को भी माफ करना सीखें। मित्रों!

कई बार हम भी किसी की बरसों की अच्छाई को उसकी एक पल की बुराई के आगे भुला देते हैं। यह कहानी हमें क्षमाशील होना सिखाती है। यह हमें सबक देती है कि हम किसी की हजार अच्छाइयों को उसकी एक बुराई के सामने छोटा न होने दें। कितनी सुन्दर कहानी है इस कहानी से हम प्रेरणा लेने की कोशिश करेंगे। मै विश्वास करता हूँ कि आप जरूर प्रेरणा लेंगे।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

अलंकरण समारोह के बाद सभी विजेताओं को राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री के साथ सामूहिक चित्र लिया जाता है। चित्र में कौन, कहां खड़ा रहेगा इसका भी पूर्व निर्धारण हो जाता है। कैलाश को उसका क्रम तथा स्थान बता दिया गया था। पहली पंक्ति में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा प्रमुख पुरस्कार विजेता थे। कैलाश को दूसरी पंक्ति में खड़ा किया गया। उसका भाग्य प्रबल था इस कारण उसे एकदम मध्य में खड़ा किया गया। राष्ट्रपति व प्रधानंत्री उसके ठीक आगे थे और इन दोनों के बीच उसने अपना स्थान बना लिया।

चित्र लेने के बाद अल्पाहार कार्यक्रम था। कैलाश इस अवसर का लाभ उठाते हुए दिग्गज हस्तियों से मिल रहा था। वह अपने सेवा कार्यो के चित्रों की एलबम सदा जेब में रखता था। इन एलबमों ने समय समय पर उसकी खूब मदद की थी। वह किसी से भी मिलता अपना परिचय देते हुए झट से उसके आगे ये एलबमें रख देता। वह एक तरह से अपना ही चलता फिरता पी आर. ओ. था। लोग उसके इन उपक्रमों का उपहास करते थे मगर वह किसी की चिन्ता नहीं करता था।

यहां भी वह एक दिग्गज हस्ती का एलबम दिखा रहा था तभी पीछे से उसने किसी को मानव जी, मानव जी पुकारते सुना। उसने घूम कर देखा तो उसे अपनी किस्मत पर यकीन नहीं हुआ। आवाज देने वाले और कोई नहीं वरन् देश के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह थे। कैलाश तुरन्त उनकी तरफ मुड़ा और अभिवादन किया मनमोहन सिंह प्रसन्न होकर उससे मिले और बोले– मैं अक्सर आपको टी.वी. पर देखा करता हूं, आप बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं।

कैलाश के हाथ में चित्रों की एलबम थी ही उसने यह एलबम प्रधानमंत्री को दे दी। इसी बीच कई फोटोग्राफर तथा मीडियाकर्मी भी एकत्र हो गये। डॉ. आर. के अग्रवाल साहब भी उसके साथ वहां उपस्थित थे। उसने उन्हें भी अपने साथ बुला लिया। प्रधानमंत्री से मिलने कई लोग उत्सुक थे, सबने उन्हें घेर लिया तो कैलाश एलबम ले एक तरफ हट गया। कार्यक्रम आधा–पौने घन्टे चला, इस दौरान कई लोगों से परिचय आदान–प्रदान करने का अवसर मिला।

अंग - 219

भगवान की कृपा

एक खास बात है कि सब अच्छे काम भगवान की कृपा से होते हैं। अच्छी बात मिलती है तो वह भी भगवान की कृपा से, अच्छे पुरुष मिलते हैं तो वह भी भगवान की कृपा से, अच्छी बुद्धि पैदा होती है तो वह भी भगवान की कृपा से, पारमार्थिक रुचि होती है तो वह भी भगवान की कृपा से, अच्छे के लिए परिवर्तन होता है तो वह भी भगवान की कृपा से!

सभी अच्छी बातों के मूल में परमात्मा ही हैं और सभी खराब बातों के मूल में हमारी कुबुद्धि, संसार की आसक्ति ही है। इसलिए हमारे को कोई अच्छी बात मिले, अच्छी सद्‌बुद्धि पैदा हो, अच्छे संत–महात्मा मिले, अच्छा संग मिले तो यह सब भगवान की कृपा है। भगवान की कृपा को स्वीकार करने से सब काम अपने आप ठीक होते हैं।

भगवान की कृपा की तरफ दृष्टि भी भगवान की कृपा से ही होती है! इसलिए मेरा सब को कहना है कि आप केवल भगवान की कृपा को माने, किसी व्यक्ति को नहीं। व्यक्ति का संयोग भी भगवान की कृपा से ही होता है। मनुष्य शरीर भी भगवान कृपा करके देते हैं। 'भगवान की कृपा बिना हेतु होती है। जो हेतु से होती है, वह कृपा नहीं होती उसमें पुण्य कारण होता है। हमारे किसी पुण्य से कृपा नहीं होती।' जो पुण्य से हो, उसमें कृपा क्या हुई? इसलिए मनुष्य शरीर में जो भी अच्छी बात होगी, कृपा से ही होगी, अपने पुरुषार्थ से नहीं।

एक फकीर की बेहतरीन बात

एक फकीर नदी किनारे बैठा था। किसी ने पूछा बाबा क्या कर रहे हो? फकीर ने कहा इंतजार कर रहा हूँ कि पूरी नदी बह जाए तो फिर पर करूँ। उस व्यक्ति ने कहा कैसी बात करते हो बाबा, पूरा जल बहने के इंतजार में तो तुम कभी नदी पार ही नहीं कर पाओगे।

फकीर ने कहा यह तो मैं तुम लोगो को समझाना चाहता हूँ कि तुम लोग जो सदा यह कहते रहते हो कि एक बार जीवन की सारी जिम्मेदारियाँ पूरी हो जायें तो भगवान का भजन करूँ सेवा करूँ। जैसे नदी का जल खत्म नहीं होगा, इसको हम जल से ही पार जाने का रास्ता बनाना होगा, वैसे ही जीवन खत्म हो जायेगा, जीव के काम कभी खत्म नहीं होंगे।